दिनांक–06.02.2025

B.A. PART- III HONS (Philosophy)

स्वधर्म

मुख्यत: धर्म के दो विभाग हैं—सामान्य धर्म और विशेष धर्म। सामान्य धर्म सबके लिये हैं। विशेष धर्म 'वर्ण और आश्रम' धर्म हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण हैं और ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, गृहस्थ और संन्यास ये चार आश्रम हैं। इन्हें ही विशिष्ट धर्म कहा जाता है।

सामान्य और विशेष धर्म के अतिरिक्त आपत्तिकालीन धर्म की भी शास्त्र में यथार्थ चर्चा है। कभी-कभी व्यक्ति परिस्थितियों के कारण अपने स्वधर्म का पालन नहीं कर पाता तथा वह स्वधर्म से अपने जीवन का निर्वाह नहीं कर पाता। ऐसे संकट और विपत्ति के समय आपद धर्म की व्यवस्था की गयी है। इस प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों के लिए आपद् धर्म की व्यवस्था भी बतलायी गयी है।

स्वधर्म (Swadharma) : श्रीमद्भगवदगीता में स्वधर्म के संबंध में कहा गया है कि स्वधर्म का पालन करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। परधर्म से सदा भयभीत रहना चाहिए अर्थात् परधर्म के पालन से बचने का प्रयास करना चाहिए। गुणरहित भी अपना धर्म अति उत्तम और परम कल्याणकारक है। अत: गीता का स्पष्ट उपदेश है कि स्वधर्म के पालन से ही मनुष्य जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। तीसरे अध्याय में इस बात को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है—

श्रेयान्स्वधर्मो विगुण: परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह:।।

प्रश्न है, स्वधर्म क्या है? गीता में स्वधर्म का अर्थ वर्णाश्रम धर्म है। दूसरे अध्याय में यह बिल्कुल स्पष्ट रूप से वर्णित है। हम जानते हैं कि वर्णाश्रम धर्म हिन्दूधर्म की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। वर्ण चार हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। प्रत्येक वर्ण के कर्तव्य निर्धारित कर दिए गए हैं। इसी तरह मानव-जीवन को चार भागों में विभक्त किया गया है और प्रत्येक भाग की पवित्रता का संकेत करने के लिए उसे आश्रम कहा गया है। ये आश्रम हैं—ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास। प्रत्येक आश्रम के कर्म निर्धारित हैं। गीता के अनुसार स्वधर्म का अर्थ वर्ण-धर्म और आश्रम-धर्म हैं। भगवान कृष्ण अर्जुन को युद्ध करने की सलाह इसलिए देते हैं कि धर्म-युद्ध करना अर्जुन का स्वधर्म है। वर्ण-धर्म के अनुसार धर्म-युद्ध करना प्रत्येक क्षत्रिय का कर्तव्य है। अर्जुन क्षत्रिय हैं, अत: धर्म-युद्ध करना उनका धर्म है। आश्रम-धर्म के अनुसार भी युद्ध करना अर्जुन का कर्तव्य है,क्योंकि वे गृहस्थ आश्रम में हैं। यदि अर्जुन अन्य आश्रम में होते, तो युद्ध करना उनका कर्तव्य नहीं होता। अत: स्पष्ट है कि गीता के अनुसार स्वधर्म का अर्थ वर्णाश्रम धर्म है। अठारहवें अध्याय में प्रत्येक वर्ण के कर्तव्यों का उल्लेख किया गया है।

स्मृतिग्रन्थों में भी स्वधर्म का अर्थ वर्णाश्रम धर्म है। मनुस्मृति में इसकी विशद विवेचना मिलती है। लोकमान्य तिलक ने भी अपने 'गीता रहस्य' में स्वधर्म का अर्थ वर्णाश्रम धर्म ही स्वीकार किया है। जैन दर्शन में भी स्वस्थान के अनुसार कर्तव्य करने का निर्देश है। इस तरह जैन दर्शन भी स्वधर्म पालन का निर्देश देता है। शंकराचार्य के अनुसार भी स्वधर्म का पालन करना हमारा कर्तव्य है। उनके अनुसार स्वधर्म का अर्थ राग-द्वेष से विमुक्त होना है।

पाश्चात्य दर्शन में भी नैतिक चिन्तकों ने स्वधर्म-पालन को मनुष्य का कर्तव्य माना है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com